इकाई – 3

अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

3.1 परिचय

3.2 इकाई के उद्देश्य

3.3 अनुवाद प्रकरणम्

3.4 अपनी प्रगति जांचिए

3.5 सारांश

3.6 मुख्य शब्दावली

3.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

3.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

3.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

3.1 परिचय

प्रस्तुत इकाई में 'हिन्दी से संस्कृत में सरल अनुवाद कैसे करें ?' इस विषय का विवेचन किया जाएगा। इस इकाई में वाक्य रचना के साधारण नियमों का विवेचन होगा तथा विभिन्न लकार तथा विभिन्न विभक्तियों का प्रयोग किस काल अथवा किस अर्थ में किया जाता है। इसका भी विश्लेषण होगा। प्रमुख प्रत्ययों का भी विवेचन होगा तथा वाच्य परिवर्तन कैसे किया जाता है इसका भी वर्णन होगा। इन सभी का अभ्यास करके विद्यार्थी सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करने में समर्थ होगा।

3.2 इकाई के उद्देश्य

- हिन्दी से संस्कृत में सरल अनुवाद करने में समर्थ होंगे;
- दैनन्दिक जीवन में काम आने वाले वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कर सकेंगे;
- आपस में संस्कृत सम्भाषण कर पाएंगे;
- वाक्य–रचना के साधारण नियमों से अवगत हो सकेंगे;
- वाच्य–परिवर्तन का विवेचन कर पाएंगे।

3.3 अनुवाद प्रकरणम्

वाक्य–रचना के साधारण नियम

1 क्रिया का प्रयोग कर्तृवाच्य में कर्त्ता के अनुसार करना चाहिए।

2 वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का (अव्यय के अतिरिक्त) विभक्ति लगाये बिना प्रयोग न करें।

3 विभक्तियों के चिन्ह को स्मरण रखें जो कि निम्नलिखित हैं – जैसे

प्रथमा – ने या जहां कोई भी विभक्ति न लगा सके।

द्वितीया – को

तृतीया – द्वारा, से

चतुर्थी – के लिए

पंचमी – से (अलग होने के अर्थ में)

षष्ठी – का, के, की

सप्तमी – में, पर

4 शब्द क्रम–संस्कृत में वाक्य रचना करते समय कर्ता–कर्म–क्रिया आदि के अपनी इच्छानुसार प्रयोग किया जा सकता है। इसमें शब्दों का क्रम नियत नहीं होता है। किन्तु कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग वाक्य के प्रारम्भ में ही करना होता है। जैसे – सम्बोधन शब्द, प्रश्नावली शब्द, कुछ अव्यय शब्द–हा, बत, अहो आदि।

5 च और वा प्रयोग सम्बद्ध शब्द के बाद में ही करें पहले नहीं।

6 शब्दों की समानता – क्रिया की कर्त्ता या कर्म से समानता, विशेषण और विशेष्य की समानता, सर्वनाम की सम्बद्ध शब्द से समानता तथा उपमान की उपमेय से समानता होना आवश्यक है।

7 एक वचनान्त वर्तमान काल की क्रिया के आगे 'स्म' जोड़ देने से भूतकालवाची क्रिया बन जाती है। जैसे – गच्छति स्म (राम जाता था।)

8 पुरुष और वचन का उचित प्रयोग सब से मुख्य है। संस्कृत में तीन पुरुष हैं। उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम (अन्य) पुरुष।

(क) अस्मद् शब्द का उत्तम पुरुष के साथ प्रयोग होता।

(ख) युष्मद् शब्द का मध्यम पुरुष के साथ प्रयोग होगा।

(ग) शेष शब्दों का अन्य पुरुष के साथ प्रयोग होगा।

9 वाक्य में दो या दो से अधिक कर्त्ता 'च' से मिले हुए हों तो क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार होगा। उत्तम पुरुष के अभाव में मध्यम पुरुष की क्रिया होगी। दोनों के अभाव में अन्य पुरुष की क्रिया होगी।

10 यदि अनेक कर्ता वा से मिले हों तो क्रिया वाक्य के अन्तिम कर्ता के अनुसार होगी। जैसे – वा यूयं वा पुस्तकं पठत।

11 जहां वत् लगता है, वहां विभक्ति नहीं लगती। जैसे – मनुष्यवत् (मनुष्य की तरह)।

अभ्यास 1

उत्तम पुरुष

(वर्तमान काल उत्तम पुरुष की क्रिया का प्रयोग)

अहं पश्यामि। मैं देखता हूं।

आवां नमावः। हम दोनों झुकते हैं

वयम् लिखावः।	हम दोनों लिखते हैं।
अहं धावामि।	मैं दौड़ता हूं।
आवाम् पठावः।	हम दोनों पढ़ते हैं।
अहं कथयामि।	मैं कहता हूं।
वयं वदामः।	हम दोनों खेलते हैं।
आवाम् क्रीडावः।	हम दोनों खेलते हैं।

अभ्यास 2

मध्यम पुरुष

(वर्तमान काल मध्य पुरुष की क्रिया का प्रयोग)

त्वं पुस्तकं पठसि।	तू पुस्तक पढ़ता है।
युवां पत्रं लिखथः।	तुम दोनों पत्र लिखते हो।
यूयं पाठं पठथ।	तुम सब पाठ पढ़ते हो।
त्वं कुत्र गच्छसि।	तू कहां जाता है ?
त्वं कन्दुकेन क्रीडसि।	तू गेंद से खेलता है।
यूयं दुग्धं पिबथ।	तुम सब दूध पीते हो।
त्वं किं पश्यसि ?	तू क्या देखता है ?
युवां भोजनं कुरुथ।	तुम सब भोजन करते हो।
युवां कुत्र गच्छथः ?	तुम दोनों कहां जाते हो ?
त्वं कम् पश्यसि ?	तू क्या देखता है।

अभ्यास 3

अन्य (प्रथम) पुरुष

(वर्तमान काल अन्य पुरुष की क्रिया का प्रयोग)

ते कुत्र गच्छन्ति ?	वे सब कहां जाते हैं ?
मोहनः पुस्तकं पठति।	मोहन पुस्तक पढ़ता है।
तौ सत्यं न वदतः।	वे दोनों सत्य नहीं बोलते हैं।
बालिका गुरुम् नमति।	बालिका गुरु का प्रणाम करती है।
छात्राः क्रीडा क्षेत्रे क्रीडन्ति।	छात्र खेल के मैदान में खेलते हैं।
सेवकाः स्वामिनं सेवन्ते।	सेवक स्वामी की सेवा करते हैं।
उद्याने मयूरः नृत्यति।	बाग में मोर नाचता है।
स पादाभ्यां चलति।	वह पैरों से चलता है।
चौरः धनं चोरयति।	चोर धन चुराता है।

ते किं कुर्वन्ति ?	वे सब क्या करते हैं ?

अभ्यास 4

लट् वर्तमान काल

अहं गच्छामि।	मैं जाता हूं।
युवाम् गच्छथः	तुम दोनों जाते हो।
सः पठति।	पह पढ़ता है।
तौ पठतः।	वे दोनों पढ़ते हैं।
ते पठन्ति।	वे सब पढ़ते हैं।

आदर्श अभ्यास 1

लट् लकार उत्तम पुरुष

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।	**अहं पुस्तकं पठामि।**
मैं यहां बैठा हूं।	**अहम् अत्र उपविशामि।**
मैं अपने घर जाता हूं।	**अहं निजगृहं गच्छामि।**
मैं पाठ याद करता हूं।	**अहं पाठं स्मरामि।**
हम दोनों कभीं भी नहीं जाते हैं।	**आवां कुत्रापि न गच्छावः।**
हम प्रतिदिन आपस में खेलते हैं।	**वयं प्रतिदिनं परस्परं क्रीडामः।**
हम रह रोज़ सन्ध्यावन्दन करते हैं।	**वयं प्रतिदिनं संध्यावन्दनं कुर्मः।**
हम दोनों फूलों को सूंघते हैं।	**आवां पुष्पाणि जिघ्रावः।**
मैं गुरु को प्रणाम करता हूं।	**अहं गुरुं नमामि।**
हम सब यज्ञशाला में यज्ञ करते हैं।	**वयं यज्ञशालायां यजामः।**

आदर्श अभ्यास 2

लट् लकार मध्यम पुरुष

आदर्श वाक्य

तू अब कहां जा रहा है ?	**त्वं अधुना कुत्र गच्छसि ?**
तुम प्रतिदिन कहां रहते हो ?	**यूयं प्रतिदिनं कुत्र वसथ ?**
तुम दोनों यहां क्या कर रहे हो ?	**युवाम् अत्र किं कुरुथः ?**
क्या तू हर रोज़ व्यायाम करता है ?	**किं त्वं प्रतिदिनं व्यायामं करोषि ?**
तू प्रातः कहां रहता है ?	**त्वं प्रातः कुत्र वससि ?**
तुम सब धीरे–धीरे दौड़ रहे हो ?	**यूयं मन्दं–मन्दं धावथ ?**
क्या तुम दोनों भोजन खा रहे हो ?	**किं युवां भोजनं भक्षयथः ?**
तुम सब फूलों को देख रहे हो ?	**यूयं पुष्पाणि पश्यथ ?**

आदर्श अभ्यास 3

लट् लकार प्रथम (अन्य) पुरुष

अब सब सो रहे हैं।	**आधुना सर्वे स्वपन्ति।**
छात्र महाविद्यालय कब आते हैं ?	**छात्राः महाविद्यालये कदा आगच्छन्ति ?**
यहां कौन रहता है ?	**अत्र कः वसति ?**
पक्षी प्रातः चहचहाते हैं।	**खगाः प्रातः कूजन्ति।**
यह पुस्तकें चुराता है।	**अयं पुस्तकानि चोरयति।**
राम चुपचाप बैठा है।	**रामः तूष्णीम् उपविशति।**
लव–कुश भाई हैं।	**लव–कुशौ भ्रातरौ स्तः।**
जो सत्य बोलता है वह सज्जन होता है।	**यः सत्यं वदति स सज्जनं भवति।**
वहां कौन पढ़ रहा है।	**तत्र कः पठति।**
स्वामी दयानन्द महापुरुष हैं।	**स्वामी दयानन्दः महापुरुषः अस्ति।**

आदर्श अभ्यास 4

तीनों पुरुषों (अनेक कर्ता) के होने पर क्रिया का निर्धारण

जब वाक्य में अस्मद्–युष्मद् तथा अन्य सर्वनाम संज्ञा आदि शब्द एक साथ कर्ता के रूप में आ जाते हैं, तब क्रिया में वचन आदि तो कर्ताओं की संख्या के अनुसार होते हैं और पुरुष का प्रयोग अस्मद् के अनुसार। अस्मद् के न होने पर युष्मद् के अनुसार और शेष अवस्था में अन्य पुरुष के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है या (अथवा) होने पर बाद वाले पुरुष (कर्ता) के अनुसार क्रिया होती है।

आदर्श वाक्य

वाक्य पुरुष (अनेक विधकर्ता)

मैं और तू यहां आनंद से रहते हैं।	**अहं त्वं च अत्र आनन्देन वसावः।**
क्या वह और राम आज रोगी है।	**किं सः रामश्च अद्य रुग्णौ स्तः ?**
हम और तुम पाठ पढ़ रहे हैं।	**वं यूयं च पाठं पठथः।**

आदर्श अभ्यास 5

च और वा के प्रयोग

आदर्श वाक्य

राम और श्याम जा रहे हैं	**रामः श्यामश्च गच्छः।**
राम, श्याम और कृष्ण मित्र हैं।	**रामः श्यामः कृष्णश्च मित्राणि सन्ति।**
मैं यहां बन्दर और मृग को देख रहां हूं।	**अहं अत्र वानरं मृगं च पश्यामि।**
यह फल खट्ठा है या मीठा ?	**इदं फलं अम्लं अस्ति मधुरं वा ?**

यहां हरि रहता है या मोहन ?	**अत्र हरिः वसति मोहनः वा ?**
राम तीन हैं राम, बलराम और परशुराम।	**रामाः त्रयः सन्ति रामः, बलरामः, परशुरामश्च**
वे या तुम सब जाते है ?	**ते यूयं वा गच्छथः ?**
मैं या तुम जाते हो ?	**अहं त्वं वा गच्छति ?**
तुम या हम जाते हैं ?	**त्वं वयं वा गच्छामः।**
यह क्या है वृक्ष या ठूंठ ?	**अयं किम् वृक्षः स्थाणुः वा ?**

आदर्श अभ्यास 6

लट् लकार (वर्तमान काल)

आदर्श वाक्य

कुछ लड़के बाग में जाते हैं।	**केचित् बालकाः उद्याने गच्छन्ति।**
क्या आकाश में बादल हैं ?	**किम् आकाशे मेघाः सन्ति ?**
तुम इधर–उधर क्यों घूम रहे हो ?	**यूयं इतस्ततः किमर्थ भ्रमथ।**
मैं प्रतिदिन नियम से व्यायाम करता हूं।	**अहं प्रतिदिनं नियमेन व्यायामं करोमि।**
हम पावों से चलते हैं। मुंह से बोलते हैं।	**वयं पादाभ्याम् चलामःमुखेन च वदामः।**
ये लड़कियां विद्यालय से आ रही हैं।	**इमाः कन्याः विद्यालयात् आगच्छन्ति।**
हम सब हरिद्वार जा रहे हैं।	**वयं हरिद्वारं गच्छमः।**
क्या आप फूलों को देख रहे हैं।	**किं भवान् पुष्पाणि पश्यति।**
पक्षी प्रातः चह चहा रहे हैं।	**खगाः प्रातः कूजन्ति।**

आदर्श अभ्यास 7

लङ्लकार (भूतकाल)

आदर्श वाक्य

तुम सब काशी क्यों गये थे ?	**यूयं सर्वे काशीनगरं किमर्थम् अगच्छत ?**
स्वामी दयानन्द एक महापुरुष थे।	**स्वामी दयानन्दः एकः महापुरुषः आसीत्**
मेरा भाई कल दिल्ली गया है।	**मम भ्राता ह्यः दिल्लीनगरं अगच्छत्।**
यह लड़का वहां कृषि विद्यालय में पढ़ता था।	**अयं बालकः तत्र कृषिविद्यालये अपठत्**
कल उन्होंने चल–चित्र देखा था।	**ह्याः ते चलचित्रम् अपश्यन्।**
तुम पहले कहां रहते थे ?	**त्वं पूर्व कुत्र अवसः।**
हमारा देश पहले पराधीन था।	**अस्माकं देशः पुरा पराधीनः आसीत्।**
हमने आज दूध नहीं पिया।	**वयम् अद्यम दुग्धं न अपिबाम।**

उसका सारा धन नष्ट हो गया।	**तस्य सर्व धनं अनश्यत्।**
हम यहां भी गये, तुम्हारी कीर्ति सुनी।	**वयं यत्रापि अगच्छाम तव कीर्तिम् अशृण्म।**

आदर्श अभ्यास 8

लृट् (भविष्यत्काल)

आदर्श वाक्य

आज रंगशाला में लव–कुश गाना गाएंगे।	**अद्य रंग–शलायां लवकुशौ गीतं गास्यतः।**
सज्जन परलोक में निचत ही सुख पाएंगे।	**सज्जनाः परलोके नूनं सुखं प्राप्स्यन्ति।**
हम दोनों वहां–अनेक प्रकार के फूल सूंघेंगें।	**आवां तत्र नानाविधानि पुष्पाणि घ्रास्यावः।**
राजा दुष्टों को कल दण्ड देगा।	**नृपः दुष्टान् श्वः दण्डयिष्यति।**
क्या तुम आज या कल कहीं जाओगे ?	**किं त्वं अद्य श्वः वा कुत्रचित् गमिष्यसि ?**
आज सायं मैदान में हाकी का मैच होगा।	**अद्य सायं क्रीडाक्षेत्रे हाकीक्रीडासाम्मुख्यं भविष्यति।**
यदि राजा प्रजा की पालना करेगा तो यश पाएगा।	**यदि नृपः प्रजाः पालयिष्यति तदा यशः प्राप्स्यति।**
हम कल बनारस चले जाएंगे।	**वयं श्वः वाराणसीनगरं गमिष्यामः।**
तुम और हम लस्सी पीएंगी।	**यूयं वयं च तक्रं पास्यामः।**
चोर अवश्य सम्पत्ति चुराएगा।	**चौरः नूनं सम्पत्तिं चोरयिष्यति।**

आदर्श अभ्यास 9

लोट् लकार (आज्ञार्थक, निमन्त्रण आदि)

आदर्श वाक्य

बचपन में विद्या और जवानी में धन कमाओ।	**शैशवे विद्यां यौवने च धनं अर्जय।**
सदा सच बोलो, झूठ नहीं।	**सर्वदा सत्यं वद असत्यं न।**
मैं चाहता हूँ राम रावण को जीते।	**अहं इच्छामि रामः रावणं जयतु।**
तुम्हारा सब मार्ग कल्याणकारी होए।	**तव सर्वेपि मार्गः शिवः भवतु।**
अपना पाठ नित्य याद करो।	**स्वपाठं नित्यं स्मरत।**
उस बेचारे रोगी कुत्ते को न मारो।	**तं वराकं रुग्णं कुक्करं न मारयत।**
तुम दोनों अपनी पुस्तक पढ़ो।	**युवां स्वपुस्तकं पठतम्।**
हम सब सन्मार्ग पर चलें।	**वयं सन्मार्गम् अनुसराम।**

शराब पीना बिल्कुल छोड़ दो।	**मद्यपानं सर्वथा त्यजत्।**
किसी की निन्दा न करो।	**कमपि न निन्दत।**

आदर्श अभ्यास 10

कर्ताकारक और कर्मकारक (प्रथम और द्वितीया विभक्ति)

आदर्श वाक्य

राजा विक्रमादित्य राजसिंहासन पर बैठे हैं।	**नृपः विक्रमादित्यः राजसिंहासनम् अधितिष्ठति।**
बालक मां की गोद में सो रहा है।	**बालकः मातुः क्रोडम् अधिशेते।**
धर्म के बिना समाज में शान्ति नहीं।	**धर्मं विना समाजे शान्तिः नास्ति।**
मुनि के चारों ओर भक्त लोग बैठे हैं।	**मुनिं परितः भक्ताः उपविशन्ति।**
गांव के दोनों ओर नदी का पानी बह रहा है।	**ग्रामं उभयतः नद्याः जलं वहति।**
वन की ओर मत जाओ।	**वनं प्रति न गच्छत।**
धिक्कार है उस कृतघ्न को, जिसने उस साधु को मार दिया।	**धिक् तं कृतघ्नं यः तं साधुं अमारयत्।**
पांच दिन लगातार वर्षा होती रही।	**पंच दिनानि यावत् वृष्टिः अभवत्।**
परिश्रम के बिना जीवन में सफलता कहां।	**परिश्रमं विना जीवने सफलता कुतः ?**
जो प्रभु को पूजते हैं वे सुख पाते हैं।	**ये प्रभुं पूजयन्ति ते सुखं प्राप्नुवन्ति।**

आदर्श अभ्यास 11

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

आदर्श वाक्य

क्या तुम हमारे साथ धर चलोगे ?	**किं त्वं अस्माभिः सह गृहं चलिष्यसि ?**
वह शक्ल से बदसूरत होता हुआ भी स्वभाव से मधुर है।	**स आकृत्या कुरूपः अपि स्वभावेन मुधरः अस्ति।**
मैंने सम्पूर्ण व्याकरण तीन वर्षों में पढ़ लिया।	**अहं सम्पूर्णं व्याकरणं त्रिभिः वर्षैः अपठम्।**
प्रातः उठ कर जल से मुंह धोओ।	**प्रातः उत्थाय जलेन मुखं प्रक्षालय।**
धर्म से रहित पुरुष पशुओं के समान है।	**धर्मेण हीनः पुरुषः पशुभिः समानः।**
जनक के समान इस महीतल पर कौन है ?	**जनकेन सदृशः अस्मिन् महीतले कः अस्ति ?**
विद्या के कारण ही मनुष्य सुखी होते हैं।	**विद्यया मनुष्याः सुखिनः भवन्ति।**
मैंने यह पुस्तक छः रुपए में खरीदी है।	**अहं अदं पुस्तकं षट् रुप्यकैः अक्रीणम्।**
तुम्हारे बिना मेरा जीवन दूभर है।	**त्वया विना मम जीवनं दुर्भरम् (कष्टकरम्) अस्ति।**
अब शोर बन्द करों।	**अधुना कोलाहलेन अलम्।**

आदर्श अभ्यास 12

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

आदर्श वाक्य

मालिक अपने नौकर पर क्रुद्ध हो रहा है।	**स्वामी स्वसेवकाय क्रुध्यति।**
स्वार्थी लोग दूसरों के दोष निकालते हैं।	**स्वार्थिनः अन्येभ्यः असूयन्ति।**
गौ का दूध बच्चों के लिये हितकर है।	**गौः दुग्धं बालकेभ्यः हितकरं अस्ति।**
प्रजाओं का कल्याण हो।	**प्रजाभ्यः स्वस्ति।**
क्या तुम्हें ये फल पसन्द हैं ?	**किं तुभ्यं इमानि फलानि रोचन्ते ?**
तुम्हें लड्डु पसन्द हैं ?	**तुभ्यं मोदकानि रोचन्ते न वा ?**
औरतों को गहने की बहुत लालसा होती है।	**स्त्रियः आभूषणेभ्यः स्पृहयन्ति।**
जो श्रेष्ठ राजा से द्रोह करते हैं वे देशद्रोही हैं।	**ये श्रेष्ठेभ्यः नृपेभ्यः द्रुह्यन्ति ते देशद्रोहिणः सन्ति।**
मैं तुम्हें तीन फल दूंगा।	**अहं तुभ्यं त्रीणि फलानि दास्यामि।**
दुर्जन तो सबसे ईर्ष्या करते हैं।	**दुर्जनाः तु सर्वेभ्यः ईर्ष्यान्ति।**

आदर्श अभ्यास 13

अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

आदर्श वाक्य

वसन्त में पेड़ से पत्ते झड़ जाते हैं।	**वसन्ते वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।**
आजकल के युवक धर्म में प्रमाद करते हैं।	**अद्यतनीयाः युवकाः धर्मात् प्रमाद्यन्ति।**
हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक भारत फैला हुआ है।	**हिमालयात् कन्याकुमारी–पर्यन्तं भारतं विस्तृतम् अस्ति।**
सिवाय हनुमान के कौन समुद्र पार कर सकता है ?	**हनुमतः ऋते कः समुद्रं तर्तुं शक्नोति ?**
क्षणभर के बाद उसने प्राण त्याग दिये।	**क्षणाद् ऊर्ध्वं स प्राणान् अत्यजत्।**
गंगा हिमालय से निकलती है।	**गंगा हिमालयात् प्रभवति।**
उसका यश दूध से भी अधिक शुभ्र है।	**तस्य यशः दुग्धात् अपि शुभ्रम् अस्ति।**
गौ को खेत से निकाल दो।	**गां क्षेत्रात् निवराय।**
गांव के बाहर एक सुन्दर उद्यान है।	**ग्रामात् बहिः एकं सुन्दरम् उद्यानम् अस्ति।**
राम श्याम से अधिक बुद्धिमान है।	**रामः श्यामात् बुद्धिमत्तरः अस्ति।**

आदर्श अभ्याास 14

सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

आदर्श वाक्य

मेरे घर के उत्तर की ओर एक मन्दिर है।	**मम गृहस्य उत्तरे एकं मन्दिरम् अस्ति।**
परमात्मा जागत् का स्रष्टा है।	**परमात्मा जगतः स्रष्टा अस्ति।**
हिमालय सब पर्वतों से ऊंचा है।	**हिमालयः सर्वेषां सर्वतानां उच्चतमः**
गंगा नदी सब नदियों से लम्बी है।	**गंगा च सर्वासां नदीनां दीर्घतमा (द्राघिष्ठा) अस्ति।**
मुझे अब भी मां की याद आती है।	**अहं अद्यापि मातुः स्मरामि।**
दशरथ का पुत्र राम हृदय सम्राट् हैं।	**दशरथस्य पुत्रः रामः अस्माकं हृदयसम्राट् अस्ति।**
सीता राम की विवाहिता पत्नी थी।	**सीता रामस्य विवाहिता पत्नी आसीत्।**
तुम तो धन की खातिर यहां रह रहे हो।	**त्वं तु धनस्य हेतोः अत्र वससि।**
तेरा नाम क्या है ?	**तव किम् नाम अस्ति ?**
गंगा–युमना का पानी पवित्र होता है।	**गंगा–यमुनयोः जलं पवित्रम् भवति।**
भाइयों का कहना मानो।	**भ्रातृणां वचनं पालय।**

आदर्श अभ्यास 15

अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

आदर्श वाक्य

तुम तो दिन में सोते हो और रात को जागते हो।	**त्वं तु दिवसे स्वपिषि रात्रौ च जागर्षि।**
कवियों में कालिदास सबसे श्रेष्ठ हैं।	**कविषु कालिदासः श्रेष्ठतमः अस्ति।**
गौओं में काली गाय बहुत दूध देने वाली होती है।	**गोषु कृष्णा बहुक्षीरा भवति।**
गुरु जी मुझ से स्नेह करते हैं।	**गुरुः मयि स्निह्यति।**
सूर्य के डूब जाने पर सब ग्वाले घर चले गए।	**सूर्ये अस्तंगते सर्वे गोपालाः गृहम् अगच्छन।**
मैं रात को तुम्हारे पास आऊंगा।	**अहं रात्रौ तव समीपे आगमिष्यामि।**
बालक का मन खेल में रमता है।	**बालकस्य मनः क्रीडायां रमते।**
मैं, पहले शिमला में रहता था अब हरिद्वार में रहता हूं।	**अहं पुरा शिमला–नगरे अवसम्, अधुना हरिद्वारे वसामि।**
तुम जुए में बहुत कुशल प्रतीत होते हो।	**त्वं अक्षेषु अति कुशलः प्रतीयसे।**
मैं अब काम में फंसा हुआ हूं।	**अहम् अधुना कार्ये व्यापृतः अस्मि।**

आदर्श अभ्यास 16

सम्बोधन का प्रयोग

आदर्श वाक्य

हे बालक ! तू पाठ याद कर।	**बालक ! त्वं पाठं स्मर।**
हे भगवान् ! भारत का भाग्योदय कब होगा ?	**हे भगवन् ! भारतस्य भाग्योदयं कदा भविष्यति।**
अरे लोगो ! भागो शेर आ रहा है।	**भो नराः ! धावत, सिंह, आगच्छति।**
अरे ! तुम सब बच्चे कहां गये थे ?	**रे ! यूयं शिशवः कुत्र अगच्छत ?**
हे पिता जी ! आप भोजन कीजिए।	**भो पितः ! भवान् भोजनं करोतु।**
हे गुरु जी ! मैं नमस्कार करता हूं।	**भो गुरो ! अहं नमामि।**
हे साधो ! उपदेश दीजियें	**भो साधो ! उपदेशं यच्छतु।**
हे भाइयों ! प्रेम से रहो।	**भो भ्रातरः ! स्नेहेन वसत।**
हे छात्रों ! मैदान में खेलो।	**भो छात्राः ! क्रीड़ाक्षेत्रे क्रीडत।**
हे मुनि ! फल खाइए।	**भो मुने ! फलानि भक्षयतु।**

आदर्श अभ्यास 17

(विशेष्य–विशेषण सम्बन्ध)

1. गुणवाची विशेषण

आदर्श वाक्य

उस स्त्री के लड़के झगड़ालू तथा लड़कियां स्वभाव की कोमल हैं।	**तस्याः नार्यः पुत्राः कलहप्रियाः कन्याश्च स्वभावेन कोमलाः सन्ति।**
गुणवान् मनुष्य को ही दान देना चाहिए।	**गुणवते मनुष्याय एव दानं ददातु (यच्छतु)।**
पढ़ी–लिखीं औरतों को समाज सेवा करनी चाहिए।	**शिक्षिताः नार्यः समाज–सेवां कुर्वन्तु।**
सुहावने दृश्य को देखकर मन शान्त हो गया।	**सुन्दरं दृश्यं दृष्ट्वा चित्तं शान्तम् अभवत्।**
रावी नदी का पानी बरसात में मैला हो जाता है।	**रावीनद्याः जलं वर्षाकाले मलिनं भवति।**
उजले कपड़े पहन कर बच्चे विद्यालय जा रहे हैं।	**उज्ज्वलानि वस्त्राणि परिधाय बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति।**
धनवान् लोग गरीबों को धन देवें।	**धनवन्तः जनाः निर्धनेभ्यः धनं यच्छन्तु।**
बीमार बच्चों को गिनो।	**रुग्णान् शिशून् गणयन्तु।**
मन को हरने वाले फूलों को देखकर दुःखित मनुष्य का मन भी प्रसन्न हो जाता है।	**मनोहारीणि पुष्पाणि दृष्ट्वा दुःखितस्य मनुष्यस्य चित्तम् अपि प्रसीदति।**

आदर्श अभ्यास 18

विशेष विशेषण

2. विशेष–विशेषण

आदर्श वाक्य

किसी स्त्री को मत सताओ।	**कामपि स्त्रियं न पीडय।**
ये लड़के बड़े चतुर हैं।	**इमे बालकाः अति चतुराः सन्ति।**
जो बलवान् मनुष्य होते हैं वे देश की रक्षा करते हैं।	**ये बलवन्तः जनाः भवन्ति ते देशं रक्षन्ति।**
किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था।	**कस्मिंश्चित् नगरे एकः ब्राह्मणः अवसत्।**
किसी राजा का एक विशाल और सुन्दर भवन था।	**कस्यचित् नृपस्य एकं विशालं सुन्दरं च भवनम् आसीत्।**
उस भयंकर शेर से हम सब डर गये।	**तस्मात् भयंकरात् सिंहात् वयं अत्रस्याम।**
ये कान्यायें मीठे फल खा रही हैं।	**इमाः कन्याः मुधराणि फलानि भक्षयन्ति।**
किस राजा के पास तुम नौकरी करते हो ?	**कम् नृपं त्वं सेवसे ?**
तुमने किस तेज बाण से इस शेर को मारा ?	**त्वं केन तीक्ष्णेन बाणेन इमं सिंहम् अमारयः।**
उसमें तरह–तरह के सुन्दर वृक्ष हैं।	**तत्र नानाविधाः सुन्दराः वृक्षाः सन्ति।**

आदर्श अभ्यास 19

(विशेष्य विशेषण)

3. क्रियाबोधक विशेषण

आदर्श वाक्य

पानी में डूबती लड़की को बचाओ।	**जले निमज्जन्तीं कन्यां रक्ष।**
उदय होते हुए सूर्य को प्रणाम करो।	**उदयन्तं सूर्यं प्रणम।**
वन में जाते हुए चारों ने हमारा धन लूट लिया।	**वने गच्छन्तः चौराः अस्माकं धनं अहरन्।**
बहती हुई नदियों का पानी पीने योग्य होता है।	**वहन्तीतां नदीनां जलं पेयं भवति।**
अस्त होते हुए राजा को कोई नहीं पूछता।	**अस्तं गच्छन्तं नृपं कोपि न पृच्छति।**
खेत चरती हुई गाय को खेत से हटाओ।	**क्षेत्रं चरन्तीं गाम् क्षेत्रात् निवारय।**
गुरु की सेवा करने वाले शिष्यों की सब प्रशंसा करते हैं।	**गुरोः सेवमानानां शिष्याणां सर्वे प्रशंसां कुर्वन्ति।**
मार्ग में जाते हुए यात्रियों को ठण्डा पानी पिलाओ।	**मार्गे गच्छतः पान्थान् शीतलं जलं पायय।**
खाते हुए लोगों को देखो।	**भक्षयतः जनान् पश्य।**
खेलते हुए बालक मुझे अच्छे लगते हैं।	**क्रीडन्तधः बालकाः मह्यं रोचन्ते।**

आदर्श अभ्यास 20

(विशेष्य विशेषण)

4. संख्यावाची विशेषण

	आदर्श वाक्य
दो लड़के आ रहे हैं।	**द्वौ बालकौ आगच्छतः।**
तीन लड़कियां जा रही हैं।	**तिस्रः कन्याः गच्छन्ति।**
इस कक्षा में कितने छात्र पढ़ते हैं ?	**अस्यां कक्षायां कति (कियन्तः) छात्राः पठन्ति ?**
12 कन्यायें और 13 लड़के मिलकर 25 हो जाते हैं।	**द्वादश कन्याः त्रयोदया बालकाश्च मिलित्वा पंचविंशाति भवन्ति।**
बाजार से 7 नींबू ले जाओ।	**विपणेः अरूट जम्बीरफलानि आनय।**
105 छात्र यहां व्यायाम कर रहे हैं।	**पंचाधिकशत छात्राः अत्र व्यायामं कुर्वन्ति।**
सुना है आज चौदहवीं तिथि हैं।	**श्रूयते अद्य चतुर्दशी तिथिः अस्ति।**
मैं अपनी श्रेणी में आठवां हूं।	**अहं स्व–श्रेण्यां अष्टमः अस्मि।**
यह 10वां पाठ है।	**अयं दशमः पाठः अस्ति।**
100 गौओं को यहां ले जाओ।	**शतं गाः अत्र आनय।**

आदर्श अभ्यास 21

कृदन्त शब्दों का प्रयोग

(भूतकालवाची क्त–क्तवतु प्रत्यय)

नियम : कर्तृवाच्य में क्तवतु और कर्मावच्य में सामान्यतः क्त का प्रयोग होता है।

	आदर्श वाक्य
उसने सांप को मार दिया।	**सः सर्पं हतवान्।**
यह सुनकर लड़के वहां से भाग गये।	**इदं श्रुत्वा बालकाः तत्रतः अधावन्।**
वह अपना पुत्र ले आया।	**तेन स्वपुत्रः आनीतः।**
तुमने क्या कहा ?	**त्वया किम् कथितम्।**
लड़कियों ने मीठा दूध पीया।	**कन्याभिः मधुरं दुग्धं पीतम्।**
उसने सुना और हंस दिया।	**तेन श्रुतं हसितम् च।**
चोर ने मेरा धन चुरा लिया।	**चौरः मम धनं चोरितवान्।**
हमने सोमवार काम शुरू कर दिया।	**वयं सोमवासरे कार्यं प्रारब्धवन्तः।**
कन्या ने शीशे में अपना रूप देखा।	**कन्या दर्पणे स्वरूपं दृष्टवती।**
उसने ऊंचे स्वर में कहा।	**स उच्चस्वरेण उक्तवान्।**

आदर्श अभ्यास 22

(क) तव्य–अनीय प्रत्यय

तव्यत् प्रत्यय

	आदर्श वाक्य
गौ हमारी माता है उसे मारना नहीं चाहिए।	**गौः अस्माकं जननी अस्ति न हन्तव्या।**
छोटे बच्चों को दूध ही पीना चाहिये।	**शिशुभिः दुग्धम् एव पातव्यम्।**
मांस कभी नहीं खाना, चाहिए।	**मांसः (पिशितम्) कदापि न भक्षयितव्यः।**
संकट में कभी चोरी न करें।	**संकटे कदापि चौर्यं न कर्त्तव्यम्।**
कल तुम्हें हरिद्वार जरूर जाना है।	**श्वः त्वया हरिद्वारं अवश्यं गन्तव्यम्।**
अच्छे कामों में कभी प्रमाद मत करो।	**सुकार्येषु कदापि न प्रमदितव्यम्।**
आज गांधी जयन्ती में सबको जाना होगा।	**अद्य गान्धी जयन्त्यां सर्वैः गन्तव्यम्।**
पिता को ईश्वर के समान मानना चाहिए।	**पिता ईश्वरवत् मन्तव्यः।**
तुम्हें प्रतिदिन पाठ याद करना चाहिए।	**युष्माभिः प्रतिदिनं पाठः स्मरणीयः।**
रोगी को कुपथ्य का सेवन कभी नहीं करना चाहिये।	**रुग्णेन कुपथ्यस्य सेवनं कदापि न कर्तव्यम्।**

आदर्श अभ्यास 23

(ख) अनीय प्रत्यय

	आदर्श वाक्य
मनुष्य सदा सत्य कहे।	**मनुष्येण सर्वदा सत्यं कथनीयम्।**
दिन में सोना नहीं चाहिए।	**दिवसे न शयनीयम्।**
छात्र पाठ याद करें।	**छात्रैः पाठः स्मरणीयः।**
किसी के साथ झगड़ा मत करो।	**केनापि सह कलहः न करणीयः।**
गुरुजनों के उपदेश की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।	**गुरूजनानां उपदेशः न उपेक्षणीयः।**
हाथ–पांव धोने चाहिएं।	**हस्तौ पादौ च प्रक्षालनीयौ।**
तुम्हें कल लौट आना चाहिए।	**त्वया श्वः प्रत्यागमनीयम्।**
कभी शराब मत पियो।	**कदापि मद्यम् न पानीयम्।**
स्वाध्याय करना न भूलो।	**स्वाध्यायध न विस्मरणीयः।**
छात्रों को प्रेम से रहना चाहिए।	**छात्रैः स्नेहेन व्यवहरणीयम्।**

आदर्श अभ्यास 24

तुमुन् प्रत्याय

आदर्श वाक्य

वे सब खेलने के लिए मैदान में गए।	**ते सर्वे क्रीडितुम् क्रीड़ाक्षेत्रे अगच्छन्।**
सुख पाने के लिए कष्ट सहना चाहिए।	**सुंख प्राप्तुं कष्टम् सहस्व (सहनीयम्)।**
तुम पढ़ने के लिए हर रोज़ कहां जाते हो ?	**त्वं पठितुं प्रतिदिनं कुत्र गच्छसि ?**
मैं कष्ट सहने के लिए तैयार हूं।	**अहं कष्टं सोढुं तत्परः अस्मि।**
वह अब पानी पीना चाहता है।	**स अधुना जलं पातुम् इच्छाति ?**
क्या तुम मेरा यह काम कर सकते हो ?	**किं त्वं मम इदं पातुम् इच्छति ?**
गुरु की आज्ञा पा कर उसने पत्र पढ़ना शुरू किया।	**गुरोः आदेश लब्ध्वा सः पत्रं पठितुम् आरभत।**
यह सुन कर वह कहने लगा।	**इदं श्रुत्वा स कथयितुम् आरभत।**
क्या तुम गाना भी जानते हो ?	**किं त्वं गानम् अपि जानासि ?**
तुम्हारा दफ्तर जाने का कौन–सा समय है ?	**तव कार्यालये गन्तुं कः समयः अस्ति ?**

आदर्श अभ्यास 25

क्त्वा–ल्यप् प्रत्यय

आदर्श वाक्य

तुझे देख कर मन प्रसन्न होता है।	**त्वां दृष्ट्वा चित्तं प्रसीदति।**
वह घर जा कर सो गया।	**स गृहं गत्वा अस्वपत्।**
वहां जा कर अब क्या करोगे ?	**तत्र गत्वा अधुना किं करिष्यसि ?**
यह प्रश्न पूछ कर मेरे पास आ जाओ।	**इदं प्रश्नं पृष्ट्वा मम समीपे आगच्छ।**
विदेश जा कर वह प्रसन्न हो गया।	**विदेशं गत्वा स हर्षं गतः।**
गुरु के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो।	**गुरुम् उपगम्य ज्ञानं लभस्व।**
विचार करके काम करना चाहिए।	**विचार्य कार्यं कर्तव्यम्।**
तुम किसे देख कर हँस रहे हो ?	**त्वं कं विलोक्य हससि ?**

आदर्श अभ्यास 26

णिजन्त (प्रेरणार्थक) वाक्यों का प्रयोग

आदर्श वाक्य

शिक्षक छात्र को संस्कृत पढ़ाता है।	**शिक्षकः छात्रं संस्कृतं पाठयति।**
पण्डित राजा सेदान दिलाता है।	**पण्डितः नृपेण दानं दापयति।**
माता पुत्र से सांप मरवाती है।	**माता पुत्रेण सर्प घातयति।**

गुरु उसको पण्डित बनाते हैं।	**गुरुः तं पण्डितं भावयति।**
जनक न राम को धनुष पकड़ाया।	**जनकः रामं धनुः अग्राहयत्।**
कैकेयी ने राम को वन भिजवा दिया।	**कैकेयी रामं वनम् अगमयत्।**
राम ने रावण को नष्ट करा दिया।	**रामः रावणं अनाशयत्।**
सेवक भक्तों को राजा के दर्शन कराता है।	**सेवकः भक्तान् नृपस्य दर्शनं कारयति।**
सूमन्त्र राम को गंगा पार कराता है।	**सुमन्त्रः रामं गंगां उत्तारयति।**
हरि उसको गांव पहुंचाते हैं।	**हरिः तं ग्रामं प्रापयति।**

आदर्श अभ्यास 27

वाच्य–परिवर्तन

1. सर्कमक वाक्यों का वाच्य–परिवर्तन आदर्श वाक्य

छात्राः शब्दं कुर्वन्ति।	**छात्रैः शब्दः क्रियते।**
युयं किं कुरुथ।	**युष्माभिः किम् क्रियते।**
पण्डितं सर्वे पूजयन्ति।	**पण्डितः सर्वैः पूज्यते।**
अहं गीतं श्रृणोमि।	**मया गीतं श्रूयते।**
रामः गां दोग्धि।	**रामेण गौः दुह्यते।**
त्वं मां स्मरसि।	**त्वया अहं स्मर्ये।**
ईश्वरः सर्वान् पश्यति।	**ईश्वरेण सर्वे दृश्यन्ते।**
अहं मोदकं इच्छामि।	**मया मोदकं इष्यते।**
शिष्याः गुरुम् पृच्छन्ति।	**शिष्यैः गुरुः पृच्छ्यते।**
सिंहः मृगः हन्ति।	**सिंहने मृगः हन्यते।**

आदर्श अभ्यास 28

वाच्यपरिवर्तन

2. अकर्मक वाक्यों का

आदर्श वाक्य

अहं भूमौ शये।	**मया भूमो शय्यते।**
ते लज्जन्ते।	**तैः लज्यते।**
सर्वे अत्र तिष्ठन्ति।	**सर्वैः अत्र स्थीयते।**
त्वं कुत्र परिभ्रमसि ?	**त्वया कुत्र परिभ्रम्यते।**
ते शय्यायाम् उपविशन्ति।	**तैः शय्यायां उपविश्यते ?**
त्वं कुख वससि ?	**त्वया कुत्र उष्यते ?**
कथाम् श्रृणु।	**कथा श्रूयताम्।**

चौराः धावन्ति।	**चौरैः धाव्यते।**
किं भवान् इदानीं पठति ?	**किं भवता इदानीं पठ्यते ?**
इति विलोक्य सर्व हसन्ति।	**इति विलोक्य सर्वैः हस्यते।**

आदर्श अभ्यास 29

वाच्य–परिवर्तन

3. कृदन्त वाक्यों का वाच्य–परिवर्तन

आदर्श वाक्य

स गीतं श्रुतवान्।	**तेन गीतं श्रुतम्।**
कन्या पुष्पं दृष्टवती।	**कन्यया पुष्पं दुष्टम्।**
त्वं मां कथितवान्।	**त्वया अहं कथितः।**
सा चित्रं गृहीतवती।	**तया चित्रं गृहीतम्।**
अहं पुस्तकानि पठितवान्।	**मया पुस्तकानि पठितानि।**
स एकां नारीं दृष्टवान्।	**मया पुस्तकानि पठितानि।**
यूयं कथां श्रुतवन्तः।	**युष्माभिः कथा श्रुता।**
वयं पुष्पाणि आनीतवन्तः।	**अस्माभिः पुष्पाणि आनीतानि।**
वानराः फलानि गृहीतवन्तः।	**वानरैः फलानि गृहीतानि।**
त्वं कदा गृहं गतः ?	**त्वया कदा गृहं गतम् ?**

आदर्श अभ्यास 30

4. तव्य अनीय का वाच्य–परिवर्तन

आदर्श वाक्य

त्वया असत्यं न वक्तव्यम्।	**त्वं असत्यं न वद।**
तेन जलं पातव्यम्।	**स जलं पिबतु।**
त्वया तत्र गन्तव्यम्।	**त्वं तत्र गच्छ।**
तेन एवं न आचरणीयम्।	**सः एवं न आचरतु।**
नृपेण प्रजाः रक्षणीयाः।	**नृपः प्रजाः रक्षतु।**
इदं पुस्तकं न पठनीयम्।	**इदं पुस्तकं न पठ।**
इमानि पुष्पाणि दर्शनीयानि	**इमानि पुष्पाणि पश्य।**
त्वया पत्रं लेखनीयम्।	**त्वं पत्रं लिख।**
गुरवः सदा पूजनीयाः।	**गुरून् सदा पूजय।**
सदा उद्यमिभिः भवितव्यम्।	**सदा उद्यमिनः भवन्तु।**

आदर्श अभ्यास 31

वाच्य–परिवर्तन

5. णिजन्त का वाच्य परिवर्तन

आदर्श वाक्य

गायकः संगीतं श्रावयति।	**गायकेन संगीतं श्राव्यते।**
स सेवकैः भोजनं पाचयति।	**तेन सेवकैः भोजनं पाच्यते।**
स मन्दिरे मूर्तिम् स्थापयति।	**तेन मन्दिरे मूर्तिः स्थाप्यते।**
ईश्वरः दुर्जनं नरंक पातयति।	**ईश्वरेण दुर्जनः नरकं पात्यते।**
स्वामी सेवकेन भारं वाहयति।	**स्वामिना सेवकेन भारः वाह्यते।**
सः दरिद्रान् भोजयति।	**तेन दरिद्राः भोज्यन्ते।**
नरः सर्वान् हासयति।	**नरेण सर्वे हास्यन्ते।**
गुरुः शिष्यं पाठयति।	**गुरुणा शिष्यः पाठ्यते।**
सज्जनः तृषितं जलं पाययति।	**सज्जंनेन तृषितः जलं पाय्यते।**
अहं कुम्भकारेण घटं कारयामि।	**मया कुम्भकारेण घटः कार्यते।**

आदर्श अभ्यास 32

अव्वय प्रयोग

आदर्श वाक्य

जहां मोहन का घर है वहां मेरा भी है।	**यत्र मोहनस्य गृहम् अस्ति तत्र मम अपि अस्ति।**
तू रात को कहां जाएगा ?	**त्वं नक्तं कुत्र गमिष्यसि ?**
यहीं मेरे ही पास क्यों नहीं ठहरता ?	**अत्र एव मम समीपं कथम् न तिष्ठसि ?**
जब सूर्योदय होता है तब अन्धेरा भाग जाता है।	**यदा सूर्योदयः भवति तदा अंधकारः नश्यति।**
अब हमारा देश निर्धन है।	**अधुना अस्माकं देशः निर्धनः अस्ति।**
यह काम मैं आज करूंगा।	**इदं कार्यं अहं अद्य करिष्यामि।**
यदि संत्संग करोगे तो सुख पाओगे।	**यदि सत्संगं करिष्यसि तर्हि सुखं प्राप्स्यसि।**
जैसा मन वैसा वचन।	**यथा चित्तं तथा वचनम्।**
राम सीता के आगे चलते थे।	**रामः सीतायाः अग्रे चलति स्म।**
सभी गुणी लोग नीचे की ओर चलते हैं।	**सर्वे गुणिनः अधः गच्छन्ति।**

अभ्यासार्थ–अनुवाद

आदर्श वाक्य

1. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करें

1 त्वं अत्र क्रीड।

2 आलस्यं मा कुरु

3 मोदकं खाद। 4 दुर्बलं रक्ष।

5 कार्य कुरु। 6 प्रथमं व्यायामं कुरु।

7 उद्यानं गच्छ। 8 भोजनं आनय।

9 सः पुस्तकं पठति। 10 मयूरः तत्र किं करोति।

11 त्वं किं पश्यसि। 12 अहं गच्छामि।

13 रमेशः किं करोति। 14 अनन्तरं सः गृहं आगच्छति।

15 अहं तत्र प्रातः समये गच्छामि। 16 ततः किं करोषि ?

17 मन्दिरस्य पुरस्तात् विशालः एकः वटवृक्षः अस्ति 18 ते किं कुर्वन्ति ?

19 ते अपि देवं नमन्ति।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1 तू स्वच्छ अक्षर लिख। 2 तू पत्र मत लिख।

3 मीठा दूध पी। 4 बाद में लड्डू खा।

5 व्यायाम और अभ्यास भी कर। 6 यहाँ गाड़ी मत ले आ।

7 इस समय वह जल पी रहा है। 8 मोर बगीचे में नाचता है।

9 मैं घोड़े को देखता हूँ। 10 वह वहाँ प्रतिदिन पढ़ता है।

11 मैं घूमने जाता हूँ। 12 तू कहाँ खेलता है।

3. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ हिन्दी में लिखें –

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रमुत्वमविवेकिता।

एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।1।।

प्रिय वाक्य–प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।

तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।2।।

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।

अहं करोमीति वृथाभिमानः, स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः।।3।।

4. हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

उद्यानस्यापरे विभागे अनेके पशवः सन्ति। सिंह–व्यार्घ–चित्रक–वृक–शृगाल– मल्ल–शूकर प्रभृतयः स्वे–स्वे पंजरे तिष्ठन्ति। हरिण–शश–वानराणां स्थानं पृथगस्ति।

5. संस्कृतभाषा में उत्तर लिखिए।

1 उद्याने के क्रीडन्ति 2 त्वं किं किं क्रेतुमिच्छसि ?

3 किं वयः तव पितृचरणानाम् ? 4 सेरभारा शर्करा कियाता मूल्येन विक्रीयते ?

5 कृषकः क्षेत्रं गत्वा किं करोति ?

6. संस्कृत के अर्थ हिन्दी में लिखिए।

1 चेतः शुद्धौ स्वस्थताधिगमः। 2 पलं छलानुबन्धि स्यात्।

3 अये कथमनम्रा वृष्टि 4 अग्निर्हिमस्य मेषजम्

5 अर्थो हि लोकेषु बन्धुः।

7. उपसर्गो की संख्या लिखिए।

8. (अ) निम्नलिखित शब्दों का सन्धि–विच्छेद कीजिए।

खलूद्यानम्, इतस्ततः, उद्यानस्यापरे, लंकेश्वरस्य, न्यवेदयत्।

(ब) हरि (पु०) शब्द का सभी विभक्तियों रूप लिखिए।

(स) गम् (गच्छ) धातु के सभी आज्ञार्थक रूप लिखिए।

9. निम्नलिखित वाक्यों को संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

1 वहाँ एक जंगल है। 2 वन का राजा शेर है।

3 शेर मांस खाता है। 4 फलों की दुकान कहाँ है।

5 आज मैं प्रसन्न हूँ। 6 भारत में अनेक नदियाँ है।

7 मैं धन चाहता हूँ।

10. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करें।

1 अहं तत्र स्थातुं गच्छामि। 2 अश्वं अस्ति धावितुं सज्जः।

3 भोजनान्तो ताम्बूलं न भक्षयसि ? 4 मप माता भगिनी वा मां परिवेषयति।

5 सात्विकं खलु तव भोजनम् ?

3.4 अपनी प्रगति जांचिए

1 संस्कृत व्याकरण के अनुसार पुरुष के कितने भेद है ?

2 लट् लकार का प्रयोग किस काल के लिए होता है ?

3 भविष्यकाल के लिए संस्कृत में किस लकार का प्रयोग होता है ?

4 अपादान कारक में कौन–सी विभक्ति का प्रयोग होता है ?

5 क्रिया का वचन और पुरुष किसके अनुसार होता है ?

3.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में 'हिन्दी से संस्कृत में सरल अनुवाद कैसे करें' इस विषय का विश्लेषण किया गया। इस इकाई में वाक्य रचना के साधारण नियम, विभिन्न लकार तथा विभक्तियों का प्रयोग, वाच्य परिवर्तन के नियम, उत्तम, मध्यम तथा प्रथम पुरुष के अनुसार वाक्य रचना, च और वा का प्रयोग, विशेष्य–विशेषण सम्बन्ध, अव्यय का प्रयोग तथा कृदन्त, तव्य–अनीय, तुमुन, कत्वा–ल्यप् आदि प्रमुख प्रत्ययों का प्रयोग; इन सभी विषयों का वर्णन किया गया है। इनका अभ्यास करके छात्र संस्कृत में अनुवाद करने में प्रवीण होंगे।

3.6 मुख्य शब्दावली

- **हाकीक्रिडासाम्मुख्यं** – हाकी का मैच
- **अद्यतनीयाः** – आजकल
- **अस्माकं** – हमारा
- **कार्यालये गन्तुं** – दफ्तर जाने का
- **न उपेक्षणीयः** – उपेक्षा नहीं करनी चाहिए

3.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

1 तीन (प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष)

2 वर्तमानकाल के लिए

3 लृट लकार

4 पंचमी विभक्ति

5 कर्ता के अनुसार

3.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1 'जहां मोहन का घर है वहां मेरा भी है।' इस वाक्य का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

2 वाच्य–परिवर्तन के प्रमुख नियमों का विवेचन कीजिए।

3 वाक्य रचना के साधारण नियमों का विश्लेषण कीजिए।

4 'जो बलवान् मनुष्य होते हैं वे देश की रक्षा करते हैं।' इस वाक्य का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

5 सभी लकारों का प्रयोग करते हुए संस्कृत में 20 वाक्यों की रचना कीजिए।

3.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

1 रचनानुवादकौमुदी – डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

2 अनुवाद चन्द्रिका – चक्रधर नौटियाल 'हंस' मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

3 अभ्यासपुस्तकम् – विश्वास, संस्कृत भारती, बेंगलूरु।

4 रूपचन्द्रिका – डॉ० सुखराम, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

5 हिन्दी–संस्कृत–कोशः – डॉ० रामसरूप 'रसिकेश', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।